शिलान्यास पद्धति

(नींव पूजन)

श्रीधर शास्त्री
पण्डित परिषद्, प्रयाग
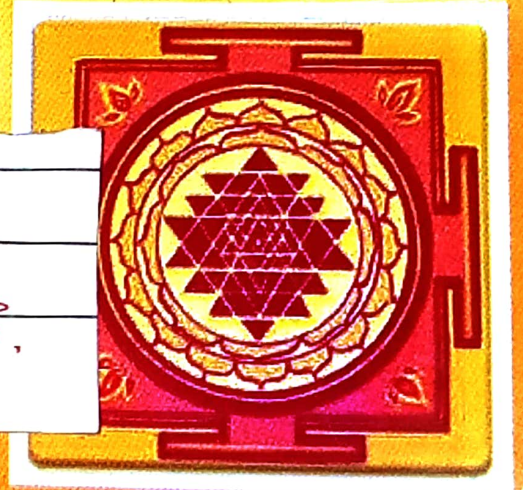
शास्त्री प्रकाशन, प्रयाग, १८७, बहादुरगंज, इलाहाबाद, ०९४१५३६५७५९, ०९४५३७०८१११

नींव पूजन पद्धति

(शिलान्यास विधि)

•

श्रीधर शास्त्री
महामन्त्री, पण्डित परिषद्, प्रयाग
मो० - ९४१५३६५७५९

•

शास्त्री प्रकाशन
१८९ बहादुरगंज, इलाहाबाद

•

मुद्रक
एकेडमी प्रेस
दारागंज, प्रयागराज

पूज्य पिताश्री
स्व० पण्डित दीनबन्धु मिश्र
की पुण्य स्मृति में

गृहारम्भ (नींव) पूजन

- नया घर बनवाने में सर्वप्रथम नींव की पूजा होती है।
- शास्त्र के अनुसार मकान मालिक नींव में नाग-कच्छप आदि की पूजा करके पहले स्वयं कम से कम ५ ईंटा जोड़ दे, तब उसके बाद मिस्त्री-मजदूर-राजगीर को आगे की जुड़ाई करनी चाहिये।
- गृहारम्भ विषयक जो वास्तुपद्धतियां उपलब्ध हैं, उनके अनुसार संस्कार कराना कठिन है, क्योंकि पद्धतियों के अनुसार समुद्र का जल, तीर्थजल-सुवर्णजल-रजतजल, सर्वौषधि-वृषशृङ्गोदक-फालकृष्ट-मृदुदक आदि ऐसी-ऐसी वस्तुओं के जल से ईटा धोने का प्राविधान है, जो सामान्यतः गृहस्थी में एकत्र कर सकना कठिन है।
- उपलब्ध पद्धतियों में पुण्याहवाचन नान्दीश्राद्ध-आदि का भी प्राविधान है। वेदीनिर्माण-पंचभूसंस्कार तथा कुशकण्डिका-हवन आदि का लम्बा चौड़ा विधान सामान्य गृहस्थ के लिए कठिन है।
- इसके अतिरिक्त काशी-बम्बई आदि विभिन्न स्थानों से प्रकाशित विभिन्न पद्धतियों में विभिन्न विधियाँ देखने को मिलती हैं। क्या करें, क्या छोड़ें—यह विषम समस्या है।
- सामान्यतः आजकल पंचदेव पूजन करके ईंटा की पूजा-भूमिपूजन-नाग-कच्छप आदि की पूजा की जाती है और नींव देने का काम (गृहारम्भ) जुड़ाई शुरू किया जाता है।

- इस पुस्तक में इसी प्रचलित विधि को सुगम रूप में लिखने का प्रयास किया गया है। प्रयत्न यही है कि कोई भी आवश्यक विषय छूटे नहीं और सभी पद्धतियों का समीकरण भी हो जाय।
- गृहारम्भ की पद्धतियों की कमी नहीं है, लेकिन साधारण पुरोहितों के लिए ये पद्धतियाँ भ्रमजाल हैं। इसी भ्रमजाल से निकलने तथा बिना किसी से पूछे या बिना किसी अटकाव के एक सामान्य पुरोहित भी नींव की पूजा करा ले— इसी दृष्टिकोण से यह पुस्तक तैयार की गई है।
- पूज्य पिताश्री स्वर्गीय पण्डित दीनबन्धु मिश्र जी की प्रेरणा से इस प्रकार की पद्धतियों के लेखन का जो कार्य मैंने उठाया है उसके तहत अब तक मूलशान्ति, वेदी पूजन (वाशिष्ठी-ग्रहशान्ति), पार्वणश्राद्ध, वृषोत्सर्ग पद्धति, एकादशाह और सपिण्डन श्राद्ध पद्धति, त्रयोदशाह विधि, वार्षिक श्राद्ध पद्धति, दीपावली लक्ष्मी पूजन विधि, सप्ताह पारायण पूजन विधि, एकादशी उद्यापन विधि, तुलसी विवाह पद्धति आदि २५ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

विश्वास है, ये पद्धतियाँ उपयोगी सिद्ध होंगी। पण्डितों-पुरोहितों से इतना निवेदन अवश्य है; इस पद्धति में जहाँ कहीं कोई त्रुटि अथवा कमी दिखाई पड़े, उसकी सूचना अवश्य देने की कृपा की जाय; जिससे भविष्य में उसका सुधार किया जा सके।

वशंवद

श्रीधर शास्त्री

महामन्त्री, पण्डित परिषद, प्रयाग

१६०, बहादुरगंज, इलाहाबाद-३

नींव पूजन सामग्री

रोड़ी	१० पैसे की
कलाई	२० पैसे की
धूपवत्ती	१ पैकेट
कर्पूर	२५ पैसे का
नवग्रह का रंग	१ पुड़िया
फूल-माला	५० पैसे का
पान-सुपारी	५-५
बताशा	१ पाव
फल	५
मिठाई लड्डू	१ पाव
सिन्दूर	१० पैसे का
लावा	१० पैसे का
घी का दीपक	१
रूई	५ पैसे की
चावल	१ छटांक

गेहूँ का आटा चौक पूरने के लिए।

१ ताँबे की लोटिया
१ ताँबे की कटोरी– लोटिया के मुँह पर
१ खैर की खूंटी– ४ अंगुल
कच्चा दूध आधी छटांक
१ सोने का साँप
१ चाँदी का कछुआ
पंचरत्नी–(सोना-चाँदी-तांबा-मूंगा-पीतल १-१ टुकड़ा)
सेतुआ—आधी छटांक
सेंवार– नदी-तालाब में जो घास होती है–१ मूठी
दूब १ मूठी
गोबर थोड़ा-सा गौर बनाने के लिए
१ मिट्टी का कुल्हड़
५ मिट्टी का पियाला– कसोरा
आम की टेरी आम्र पल्लव
५ नया ईंटा

- सीमेंट-बालू आदि ईंटा जोड़ने के लिए तथा मिस्त्री राजगीर की कन्नी-वसूली भी तैयार रखना चाहिए।
- कन्नी-वसूली की भी पूजा की जाती है। अतः उसे धोकर कलावा (रक्षा-सूत्र) बाँधकर नवग्रह के पास रख लें।

पूजन-प्रारम्भ

◇ पूर्व मुख बैठकर पूजन प्रारम्भ करें

◇ कुशा या आम्रपल्लव से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिड़कें— मंत्र

॥ ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरी काक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

◇ तीन बार आचमन करें—

॥ ओम् नारायणाय नमः ॥ ओम् केशवाय नमः ॥ ओम् माधवाय नमः ॥

◇ हाथ धो लें—

॥ ओम् हृषीकेशाय नमः । पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॥

◇ पवित्री (पैंती) पहनें— निम्न मन्त्र पढ़ते रहें—

॥ ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत् पुनाम्यच् छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।

◇ हाथ में अक्षत पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन करें—

ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो ऽदब्धासो अपरीता स उद्भिदः। देवा नो यथा सद मिद् वृधे असन्न प्रा युवो रक्षितारो दिवे दिवे। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम् देवाना ७ राति रभि नो निवर्तताम्। देवाना ७ सख्यमुपसे दिमावयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे। तान् पूर्वया निविदाहू, महे वयं भगं मित्र मदितिम् दक्ष मस्रिधम्। अर्यमणं वरूण ७ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्। तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिष्ण्या युवम्। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियन् जिन्व मवसे हू महे वयम्। पूषानो यथा वेद सा मसदवृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये। स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर् दधातु। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः स्थिरै रंगैस्तुष्टवा ७ सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रा सो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषता युर्गन्तोः। अदिति र्द्यौ रदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता सपिता सपुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजनाअदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः

सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः। पशुभ्यः। विश्वानि देव सविर्तदुरतानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।

ओम् शान्तिः । शान्तिः । शान्तिः । सुशान्तिर्भवतु । सर्वा रिष्ट शान्तिर्भवतु ॥

◇ हाथ का अक्षत-पुष्प अपने सामने पृथिवी पर छोड़ दे—

◇ दूसरा अक्षत्-पुष्प लेकर प्रार्थना करें—

१ ओम् सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
२ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
३ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
४ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णम् चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये ॥
५ अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः । सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
६ सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥
७ सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ॥
८ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, तारावलं चन्द्रवलं तदेव ।
विद्यावलं दैववलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रि युगस्मरामि ॥
९ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
१० वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

११ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्रश्री विजया भूतिर् ध्रुवानीति मतिर्मम ॥
१२ अनन्याश् चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
१३ स्मृतेः सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते । पुरुषं तजमं नित्यं व्रजामि शरणं मम ॥
१४ सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस् त्रिभुवनेश्वराः । देवाः दिशन्तु नः सिद्धिम् ब्रह्मेशान जनार्दनाः ॥
श्रीमन्महा गणाधिपतये नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्याम् नमः। ओम् लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। शची पुरन्दराभ्यां नमः। मातृ-पितृ चरण कमलेभ्योनमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवेभ्योनमः। स्थानदेवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

◇ हाथ का अक्षत-पुष्प पृथिवी पर छोड़ दे—

◇ कुश-अक्षत-जल-पुष्प-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

हरिः ओम् तत् सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे-अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैक देशे पुण्यक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवतसरे यथायनेसूर्ये यथाऋतौ च महामांगल्यप्रदे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे यथानक्षत्रे यथाराशिस्थिते सूर्ये यथा-राशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथालग्नमुहूर्त योग करणान्वितायाम्-एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ श्रुति स्मृति पुराणोक्त

फलप्राप्तिकामः अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् स्वकीय जन्मलग्नतो वा दुस्स्थानगत ग्रहजन्यसकलारिष्ट निवृत्यर्थम्-उत्पन्न-उत्पत्स्यमान-अखिलारिष्ट निवृत्तये दीर्घायुष्य सतता-रोग्यतावाप्तये धन-धान्य समृद्ध्यर्थम्-च-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांगर्गिक-चतुर्विध पुरुषार्थ प्राप्त्यर्थम्-च-धन-धान्य-पुत्रपौत्रादि-अनवच्छिन्न सत्संगतिलाभार्थम्-शत्रुपराजय-बहुकीर्त्यादि-अनेकानेक-अभ्युदय-फल प्राप्त्यर्थम् तथा च एतत् स्थानाधिकरणक निर्विघ्नपूर्वक चिरकालवासकामनया गृहारम्भं करिष्ये; तदंगत्वेन निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थम्-गणेशाम्बिकयोः पूजनं भूमिपूजनं, शिलापूजनं, नागपूजनादिकं च करिष्ये ॥

◇ संकल्प पढ़कर हाथ का अक्षत-पुष्प-कुशा-द्रव्य पृथिवी पर छोड़ दे।

पृथिवी-गौरी-गणपतिकलश पूजन

॥ ओम् पृथिव्यै नमः ॥

◇ यह कहते हुए तीन बार गौर गणेश के सामने पृथिवी पर जल छोड़े तथा रोली-अक्षत-पुष्प छोड़कर पृथिवी का पूजन करे।

◇ दाहिने हाथ से क्रमशः पृथिवी आदि का स्पर्श करे— कलश स्थापित करे—

◇ भूमि स्पर्श— [गौरी गणेश के सामने जहाँ पूजन किया है, उस स्थान को छू ले]

ओम् भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ।
पृथिवीं यच्छ पृथ्वीं दृ ꣳ ह पृथिवीं माहि ꣳ सीः ।

◇ गौरीस्पर्श—

ओम् मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषु मानोअश्वेषु रीरिषः।
मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सद मित त्वा हवा महे।

◇ गणपतिस्पर्श—

ओम् गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसो मम। आहम जानि गर्भ ध मा त्वम जासि गर्भधम्।

◇ कलश के नीचे सप्तधान्य स्पर्श—

ओम् धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसिति मायुषे धान् देवो-वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम् पयोसि।

◇ कलशस्पर्श—

ओम् आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः।
पुनरुर्जा निवर्तस्व सानः सहस्रन्धुक्ष्वो रुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद् रयिः॥

◇ कलश में जल छोड़ें—

ओम् वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि।
वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदन मासीद॥

◇ कलश में कुशा छोड़ें—

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

◇ कलश में गन्ध (रोली)—

॥ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

◇ कलश में औषधि—[अभाव में अक्षत छोड़ें]

॥ओम् या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रि युगम्पुरा।
मनैनु बभ्रूणामह ꣳ शतन्धामानि सप्त च॥

◇ कलश में दुर्वा—

॥ओम् काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषःपरुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

◇ कलश में आम्रपल्लव—

॥ओम् अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥

◇ कलश में सप्तमृत्तिका [अभाव में अक्षत]

ओम् स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म्म सप्रथाः॥

◇ कलश में सुपारी—

॥ओम् याः फलीनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्व ꣳ ह सः॥

◇ कलश में सूत्र [कलावा] लपेटना

॥ओम् युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

◇ कलश में द्रव्य [पैसा-रुपया]

॥ओम् हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

◇ कलश के ऊपर जवा भरा पियाला रखें—

॥ओम् पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ꣳ शतक्रतोः॥

◇ कलश पर दीपक रखें—

॥ओम् अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर् वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

◇ हा में अक्षत लेकर आवाहन करे : अक्षत कलश पर छोड़ दे—

॥ ओम् तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तद शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणे ह बोध्य रूश ७ स मान आयुः प्रमोषीः॥
ओम् भूर्भुवः स्वः कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम्-
आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि॥

गौरी-गणपति पूजन

◇ अक्षत-पुष्प लेकर गणेश आवाहन

(१) ओम् गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ७ हवामहे वसोमम। आहम जानि गर्भध मा त्वम जासि गर्भधम्॥

(२) ओम् हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिका त्रयम्बकात्मज।
सिद्धि बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः॥
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजं।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश परश्वधैः॥
आवाहयामि पूजार्थम् रक्षार्थम् च मम क्रतोः।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे॥
ओम् भू भुवः स्वः सिद्धिबुद्धि सहिताय गणपतये नमः।
गणपतिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

◇ गौरी आवाहन—

(१) ओम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण॥

(२) ओम् हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरी मावाहयाम्यहम्॥
ओम् भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः। गौरीमावाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि॥

◇ प्रतिष्ठा—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ॥

ओम् अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यैः प्राणाः क्षरन्तु च॥
अस्यै देवत्व मर्चायै माम हेति च कश्चन॥ गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवतम्।

◇ हाथ का अक्षत-फूल गौरी-गणेश पर चढ़ा दें—

◇ गौरी-गणेश के सामने तीन बार जल छोड़ें—

ओम् पादयोः पाद्यं प्रति गृह्यताम्॥

ओम् हस्तयोः अर्घ्यम् समर्पयामि॥

ओम् पाद्ययोः पादम्-हस्तयोः अर्घ्यम्-मुखे आचमनीयम्-जलं समर्पयामि।

◇ शुद्ध जल स्नान (जल छिड़के)

ओम् मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपाप हरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देवाः ! स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम्॥

◇ १ टुकड़ा कलावा चढ़ा दें—

॥ओम् सर्वाभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे।
मयोप पादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

◇ वस्त्र के बाद आचमन—२ बार जल छोड़ें—

॥ वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

◇ गौरी-गणेश को रोली—

॥ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्॥

◇ गौरी को सिन्दूर—

॥ओम् सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं प्रियवर्धनम्।
सुखदं मोक्षदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

◇ अक्षत चढ़ावें—

ओम् अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण गणनायक॥
गृहाण परमेश्वरि॥

◇ मालाफूल—

ओम् माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण गणनायक॥
गृहाण परमेश्वरि॥

◇ धूप-बत्ती दिखाएँ—

ओम् वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

◇ दीप (आरती) करें—

॥ओम् आज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह॥
दीपं गृहाण देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा॥

◇ हाथ धोकर नैवेद्य लगावें—

॥ओम शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्।
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

◇ आचमन हेतु जल छोड़ें—

॥ओम् सर्व पाप हरं दिव्यं गंगेयं निर्मलं जलम्।
आचमनीयं मया दत्तं गृह्यताम् गणनायक॥
गृह्यताम् परमेश्वरि॥
आचमनीयं मध्ये पानीयम्-उत्तरापोशनं समर्पयामि॥

◇ फल चढ़ावें—

॥ओम् इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि-जन्मनि॥

◇ पान-सुपारी चढ़ावें—

॥ओम् पूगीफल महद् दिव्यं नागवल्लैर्दलैर्युतम्।
एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

◇ दक्षिणा चढ़ावें—

॥ओम् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेयम्॥

◇ विशेषार्घ—एक दोनिया में जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-दूर्वा-दक्षिणा लेकर निम्न मंत्र पढ़ें—

ओम् रक्ष-रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक। भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात्।
द्वै मातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम॥

◇ दोनिया का जल-फूल आदि गणेशजी पर चढ़ा दें।

◇ फूल लेकर प्रार्थना करें—

ओम् विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय। लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय॥
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय। गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
भक्तार्ति नाशन पराय गणेश्वराय। सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय॥
विद्याधराय विकटाय च वामनाय। भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते॥
नमस्ते ब्रह्म रूपाय विष्णुरूपाय ते नमः। नमस्ते रुद्र रूपाय करि रूपाय ते नमः॥
विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे। भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
त्वं विघ्न शत्रुदलनेति च सुन्दरेति। भक्त प्रियेति सुखदेति फल प्रदेति॥
विद्या प्रदेति अघ हरेति च ये स्तुवन्ति। तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥
गणेश पूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्। तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम॥
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।

कलश पूजन

◇ हाथ में अक्षत लेकर कलश की प्रार्थना करें—

ओम् कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
नदाश्च विविधा जाता नद्याः सर्वास्तथापराः॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥

ओम् सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थम् दुरित क्षय कारकाः॥

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ঁ समिमन्धातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।
॥ कलशे वरुणादि-आवाहित देवताः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु॥

◇ हाथ का अक्षत कलश पर छोड़कर कलश पूजन करें।

◇ तीन बार कलश के आगे जल चढ़ावें—निम्न मंत्र पढ़ता रहे—

ओम् पादयोः पाद्यम्॥ हस्तयोः अर्घ्यम्॥ मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

◇ गंगाजल स्नान— **॥ ओम् शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥**

◇ कलाई का टुकड़ा चढ़ावें— **॥ ओम् वस्त्रम्-उपवस्त्रम् समर्पयामि। वरुणाय नमः॥**

◇ जल छोड़ें— **॥ वस्त्रान्ते आचमनीयं जलम् समर्पयामि॥**

◇ रोड़ी— **॥ ओम् गन्धं समर्पयामि। वरुणाय नमः॥**

◇ अक्षत चढ़ावे— **॥ ओम् अक्षतान् समर्पयामि। वरुणाय नमः॥**

◇ फूलमाला— **॥ ओम् पुष्पमालां समर्पयामि। वरुणाय नमः॥**

◇ धूप— **॥ ओम् धूपम्-आघ्रापयामि॥**

◇ दीप— **॥ ओम् दीपम् दर्शयामि॥**

◇ हाथ धोकर-नैवेद्य— **॥ ओम् नैवेद्यं निवेदयामि॥**

◇ आचमन हेतु ३ बार जल—

॥ नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयम्-उत्तरापोशनं समर्पयामि॥

◇ फल— **॥ ओम् ऋतुफलं समर्पयामि॥**

◇ ताम्बूल— **॥ ओम् ताम्बूलं-पूगीफलं समर्पयामि॥**

◇ दक्षिणा— **॥ ओम् दक्षिणाद्रव्यम् समर्पयामि॥**

◇ हाथ में जल लेकर निम्न वाक्य पढ़े और जल पृथ्वी पर छोड़ दें—

ओम् एतेन गन्धाक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य—ताम्बूल पूगीफल दक्षिणा
द्रव्येण अनया पूजया वरुणादि आवाहित देवताः प्रीयन्तां न मम।

◇ अक्षत लेकर प्रार्थना करें—

ओम् देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥
त्वत् तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्त्तुमीहे जलोद्भव॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।
क्षेमकर्त्ता, तुष्टिकर्त्ता, पुष्टिकर्त्ता, वरदो भव॥

◇ प्रार्थना के बाद अक्षत कलश पर चढ़ा दें।

षोडशमातृका पूजन

◇ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से कलश की दाहिनी ओर पीठ पर बने १७ खाने में अथवा एक प्याले में थोड़ा-थोड़ा छिड़कें, आवाहन—प्रतिष्ठा करें—

१. ओम् गणपतये नमः — गणपतिमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
२. ओम् गौर्यै नमः — गौरीमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
३. ओम् पद्मायै नमः — पद्मामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
४. ओम् शच्यै नमः — शचीमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
५. ओम् मेधायै नमः — मेधामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
६. ओम् सावित्र्यै नमः — सावित्रीमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
७. ओम् विजयायै नमः — विजयामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
८. ओम् जयायै नमः — जयामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
९. ओम् देवसेनायै नमः — देवसेनामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
१०. ओम् स्वधायै नमः — स्वधामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
११. ओम् स्वाहायै नमः — स्वाहामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
१२. ओम् मातृभ्यो नमः — मातृः आवाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
१३. ओम् लोकमातृभ्यो नमः — लोकमातृः आवाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
१४. ओम् धृत्यै नमः — धृतिमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
१५. ओम् पुष्ट्यै नमः — पुष्टिमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
१६. ओम् तुष्ट्यै नमः — तुष्टिमावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।
१७. ओम् आत्मनः कुलदेवतायै नमः — आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि — स्थापयामि — पूजयामि।

◇ प्रतिष्ठा—

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमंतनो त्वरिष्टं यज्ञं ७ समिमन्दधातु।
विश्वे देवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।

ओम् गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥
गौर्याद्याः कुल देवतान्त मातरो गणपतिसहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

नवग्रह पूजन

◇ बायें हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से कलश की बायीं ओर पीठ पर बने नवग्रह वेदी पर अथवा पियाले में छिड़क कर आवाहन करें—मंत्र

◇ १. ओम् सूर्याय नमः-सूर्यम्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।
◇ २. ओम् चन्दमसे नमः-चन्द्रमसम्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।
◇ ३. ओम् भौमाय नमः-भौमम्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।
◇ ४. ओम् बुधाय नमः-बुधम् आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।
◇ ५. ओम् गुरुवे नमः-गुरुम्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।
◇ ६. ओम् शुक्राय नमः-शुक्रम्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।

◇ ७. ओम् शनैश्चराय नमः-शनैश्चरम्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।
◇ ८. ओम् राहवे नमः-राहुम्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।
◇ ९. ओम् केतवे नमः-केतुम्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।

◇ स्थापना मन्त्र

ओम् मनोजूति जुषता माज्यस्य वृहस्पतिर् यज्ञमिमन् तनो त्वरिष्टं
यज्ञ ७ समिमन् दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन् तामोम् प्रतिष्ठ॥
ओम् आदित्यादि ग्रह मण्डल देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु॥

◇ षोडश मातृका तथा नवग्रह का पूजन करें—

◇ दोनों ओर ३-३ बार जल छोड़ें—

॥ओम् पादयोः पाद्यम्। हस्तयोः अर्घ्यम्। मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि॥
स्नानार्थम् जलं समर्पयामि॥

◇ दोनों ओर रोली लगा दें—

ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्॥

◇ अक्षत—

ओम् अक्षताश्चग्रहाः सर्वे कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहृणन्तु कृपां कुरुत॥

◇ फूल—

ओम् सुमाल्यानि सुगन्धीनि मालत्यादिनि वै ग्रहाः।
मयाहृतानि पूजार्थम् पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥

◇ धूप—

ओम् लवंगपाटी रजचूर्ण वर्धितं नरासुराणां मयि सौख्य दायकम्।
लोकत्रये गन्ध चय प्रसारकं गृह्णन्तु धूपं गुरूकं नवग्रहम्॥

◇ दीप—

ओम् सद्वर्त्तिका ज्ञान विवर्धिका मिमां निपात्य दीपे विनिवेदितं तथा।
प्रज्वालितं ध्वान्त विनाशकारकं गृहणन्तु ज्ञानस्य विशाल रूपकम्॥

◇ हाथ धोकर नैवेद्य—

ओम् सिद्धान्न कर्पूर विराजितं पुरः सौरम्य सान्द्रेण विवर्धितं तथा।
नैवेद्य मेतद् रुचिरं सुगन्धितं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु वै॥

◇ ३ बार जल आचमन—

ओम् नैवेद्यन्ते जलमाचनीयम्-उत्तरापोशनं समर्पयामि।

◇ फल—

ओम् इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

◇ पान सुपारी—

ओम् दिव्या ग्रहा नव समेत्य गृहं मदीयं भक्त्यार्पितं परम गन्धयुतं सुरम्यम्।
एलालवंग बहुलं क्रमुकादि युक्तं ताम्बूल मद्य मम गृहणत हे मुनीन्द्रा॥

◇ दक्षिणा—

ओम् देवासुर नित्यमशेष काले प्रगीयमानाः प्रभवः पुराणाः।
गृहणन्तु सद्यः खलु दक्षिणां च ध्यानेन भक्ते मयि वर्तितव्यम्॥

◇ दाहिने हाथ में जल-गन्ध-अक्षत लेकर निम्न मन्त्र पढ़कर नवग्रह के समीप भूमि पर छोड़ दें—

ओम् आदित्यादि ग्रहाः सर्वे पीठे चात्र प्रतिष्ठिताः।
ते गृहणन्तु मया दत्तम्-इदमर्घ्यम् नमोऽस्तु वः॥

◇ प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना करें—

ओम् गणेश पूर्विका देव्यो गौर्यादि प्रमुखाः स्मृताः।
प्रसीदन्तु हि कण्याण्यो निर्विघ्नं कुरुताध्वरम्॥
ओम् ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

◇ इसके बाद—नाग-कच्छप आदि की पूजा क्रमशः निम्न प्रकार से करें—

नाग-कच्छप पूजन

◇ नवग्रह से उत्तर पूर्व (ईशान कोण में) रोड़ी या हल्दी से अष्टदल कमल बनाकर १ ताँबे की लोटिया स्थापित करें। लोटिया के गले में रक्षा सूत्र (कलाई) लपेट दें।

◇ लोटिया के भीतर सोने का सांप तथा चाँदी का कच्छुवा रख दें।

◇ अक्षत लेकर कच्छप तथा नाग का आवाहन करें—

१. ओम् वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्-स्वावेषा अनमीवो भवानः यत्वे।
महे पतितन्नायुष सुशन्नो भवद् द्विपदे शं चतुष्पदे॥

२. ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवी मनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

३. ओम् यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम्।
तस्मै देवा अधिब्रुवन् नयश्च ब्रह्मणस्पतिः॥ ओम् कूर्माय नमः॥

४. ओम् खड्गो वैष्वदैवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते। रक्षसामिन्द्राय सूकरः सि ७ हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विष्वेषां देवानां पृषतः॥ ओम् वाराहायनमः॥

५. ओम् मनोजूतिर्जषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन् तनो त्वरिष्टं।
यज्ञ ७ समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ॥

◇ अक्षत लोटिया में छोड़ दें।

◇ यथाविधि कच्छप और नाग की पूजा कर दें।

◇ लोटिया में पंचरत्नी छोड़ दें।

◇ १ पियाला में घी-लावा-दूध-दूब (सेवार) लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ओम् सर्वलक्षण सम्पन्न सर्वेश कमलाधिप। अर्घम् गृहाण देवेश विष्णुरूप नमोऽस्तुते।
हिमकुन्द प्रतीकाश नागानन्त महाफणीन्। शंखचूड़ महापद्म गृहाणार्घम् नमोऽस्तुते॥

◇ पियाले का दूध-लावाँ आदि लोटिया के भीतर छोड़ दें।

◇ अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करें—

ओम् वास्तोष्पतिम् जगद्देवं सर्व सिद्धि विधायकम्।
स्थापयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम्॥
देवदेवं गणाध्यक्षं पाताल तल वासिनम्।
शान्तिकर्तार मीशानं तं वास्तुं प्रणतोऽस्म्यहम्॥
कूर्मदेवं नमस्तुभ्यं सर्वकामफलप्रद।
गृहेऽस्मिन् स्थिरोभूत्वा मम स्वस्तिकरो भव॥
त्रिविक्रमाया मित विक्रमाय महावराहाय सुरोत्तमाय।
श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद॥

◇ अक्षत फूल लोटिया पर चढ़ा दें।

◇ लोटिया का मुख ताँबे की कठेरी से बन्द कर दें।

ईंट की पूजा

◇ ५ नया ईंटा धोकर सामने अलग-अलग रखें।

◇ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत पांचों ईंटों पर छोड़कर आवाहन करें—

१. ओम् नन्दे नन्दय वाशिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।
समुद्र परिवारे त्वं देवि गर्भम् समाश्रय।
ओम् भूभुर्वः स्वः नन्दायै नमः। नन्दामावाहयामि॥

२. ओम् सर्ववीज समायुक्ते सर्वरत्नौषधीवृते।
भद्रे काश्यप दायादे कुरु भद्रां मतिं मम।
ओम् भूभुर्वः स्वः भद्रायै नमः। भद्रामावाहयामि॥

३. ओम् प्रजापति सुते देवि चतुरस्रे महीयसि।
जये सुरुचिरे देवि वाशिष्ठे रम्यतामिह।
ओम् भूर्भुवः स्वः जयायै नमः। जयामावाहयामि॥

४. ओम् पूजिते परमाचार्यैः गन्धमाल्यैरलंकृते।
सुभगे सुप्रमे रिक्ते गृहे काश्यपि रम्यताम्।
ओम् भूभुर्वः स्वः रिक्तायै नमः। रिक्तामावाहयामि॥

५. ओम् एकान्ते सर्वभूतेशे पर्वतासन मण्डिते।
भवभूतिकरे देवि गृहे पूर्णे तु रम्यताम्।
ओम् भूर्भुवः स्वः पूर्णायै नमः। पूर्णामावाहयामि॥

◇ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

ओम् देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे।
कुटुम्बादिक तुष्ट्यर्थम् धनधान्य करी भव॥
अव्यङ्गे चाक्षते पूर्णे मुने रंगिरसः सुते।
इष्टके त्वं प्रयच्छेष्टं प्रतिष्ठां कारयाम्यहम्॥

◇ हाथ का अक्षत ५ ईंटों पर छोड़ दें—

ओम् मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्। तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन् दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन् ता मोम् प्रतिष्ठ॥
ओम् भूर्भुवः स्वः इष्टकान् आवाहयामि—स्थापयामि—पूजयामि॥

◇ कुशा से ५ ईंटों पर गंगाजल छिड़के—

नन्दा पर १. ओम् आव्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

भद्रा पर २. ओम् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर् यजत्राः।
स्थिरै रंगैस् तुष्टुवा ७ सस्तनू भिर् व्यशे महि देवहितं यदायुः॥

जया पर ३. ओम् जातवेदसे सु न वामसो ममरातीयतो निदहातिवेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः॥

रिक्ता पर ४. ओम् यमाय त्वाऽङ्गिरस्वतेपितृमते स्वाहा।
स्वाहा-घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

पूर्णा पर ५. ओम् पूर्णादर्विपरापत संपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ७ शतक्रतोः॥

◇ ईंटा पर स्वास्तिक बना दें और पांचों ईंटं का पूजन कर दें।

◇ ईंटों के ऊपर कपड़ा बिछा कर या रक्षासूत्र (कलाई) रख कर फिर से ईंटा के ऊपर अक्षत छिड़क कर ब्रह्मा विष्णु आदि की पूजा करे—मन्त्र पढ़ता रहे—

१. ओम् ब्रह्मणे नमः। २. ओम् विष्णवे नमः। ३. ओम् रुद्राय नमः।
४. ओम् ईश्वराय नमः। ५. ओम् सदाशिवाय नमः॥

◇ पूजा करके हाथ में जल लेकर छोड़ दें. हाथ जोड़ लें—

अनेन पूजनेन्न देवाः प्रीयन्तां न मम॥
क्षेमकर्तारः पुष्टिकर्तारः वरदा भवन्तु॥

स्थलपूजन

◇ जिस स्थान पर नींव (नेह) रखना हो, उस स्थान पर कुशा या आम्र पल्लव से जल छिड़कें—

ओम् आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।
योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः॥ उशतीरिव मातरः।
तस्मा अरंग मामवो ग्रस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजन यथा च नः॥

◇ अक्षत लेकर भूमि की प्रार्थना करें—

१. ओम् आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि।
उद्धृतासि वराहेण सशैल वन कानने॥
कूर्म पृष्ठो परिस्थां च शुक्लवर्णाम् चतुर्भुजाम्।
शंखपद्मधरां चक्र शूलयुक्तां धरां भजे॥

२. ओम् स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छानः शर्म सप्रथाः॥

◇ अक्षत भूमि पर छोड़ दें—भूमि की पूजा कर दें।

◇ ३ बार जल छोड़ें। गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-जल-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दें।

◇ एक पियाले में जल-गन्ध-अक्षत-फूल लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ओम् पृथिवी ब्रह्म दत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता।
गृहाणार्घमिमम् देवि प्रसन्ना वरदा भव॥

वसुधे हेम गर्भासि शेषस्योपरि शायिनि।
तव पृष्ठे वसाम्येतत् गृहणार्घम् धरित्रि मे॥

◇ यह पढ़कर पियाले का जल आदि भूमि पर चढ़ा दें।

◇ अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करें—

ओम् उपचाराणि माँस्तुभ्यं ददामि परमेश्वरि।
भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः॥

ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दं वै श्रवणेन च॥

देवेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनबृद्धिकरी भव॥
यथाचलो गिरिर्मेरु रावास मचलं कुरु।
आरोपितं गृहाधारं तथा त्वमचला भव।
क्षेमकर्त्री-तुष्टिकर्त्री-पुष्टिकर्त्री-वरदात्रीभव।

◇ १ खैर की खूँटी लेकर अपने सामने रखें—पूजा करें—

◇ प्रार्थना करें—

ओम् यथा चलो गुरुर्मेरु रावा समचलं मम।
आरोपितं गृह स्तंभं तथा त्व मचलं कुरु॥

कन्नी-वसूली की पूजा

◇ मिस्त्री (राजगीर) से कन्नी-वसूली लेकर गंगाजल से धोकर उसमें रक्षासूत्र (कलाईनारा) बाँध कर अपने सामने रखें।

◇ अक्षत लेकर प्रार्थना करें—

ओम् अज्ञानात् ज्ञानतो वापि दोषा स्युश्च यदुद्भवाः।
नाशयत्वं हितान् सर्वान् विश्वकर्मन् नमोऽस्तुते॥

◇ कन्नी-वसूली की पूजा कर दें, प्रार्थना करें—

ओम् त्वष्ट्रा त्वम् निर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया।
पूजितोऽसि खनित्रि त्वं सिद्धिदो भव नो ध्रुवम्॥

◇ मिस्त्री-राजगीर को तिलक लगा दें—

मन्त्र— ओम् विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्र मकृणो रवघ्यम्।
तस्मै विशः समन मन्त पूर्वीरय मुग्रो विहव्यो यथाऽसत्॥

◇ मिस्त्री को नेग देकर आज्ञा माँगे। तब कन्नी-वसूली का प्रयोग करें।

◇ पूजा की हुई जमीन पर बीचों-बीच खैर की खूँटी गाड़ दे।

◇ खूँटी बिल्कुल जमीन के भीतर चली जाय।

◇ इस खूँटी के ऊपर—ताँबे की लोटिया ढंकी-मूंदी-ज्यों की त्यों उठाकर रख दें।

◇ कटोरी के ऊपर भी लावा-सेतुवा-सेवार (जो नदी तालाब में घास होती है) रख दें।

◇ चूना-सीमेन्ट आदि से लोटिया को ढंककर उसी के ऊपर पाँचों ईंटा [जिसकी पूजा की गयी है,) उठा कर जोड़ाई कर दें।

◇ ईंटा कम पड़े तो और ५ ईंटा या ७ ईंटा जरूरत के अनुसार लेकर चूना-सीमेंट से मजबूत जोड़ दें।

◇ किसी तरह से लोटिया बाहर न निकल सके।

◇ जोड़ाई के बाद ईंटा के ऊपर सीमेन्ट लगाकर चौकोर चबूतरा ऐसा बना दें, और उसके ऊपर रोड़ी से स्वस्तिक बना दें, अक्षत-पुष्प छोड़ दें।

◇ फूल लेकर प्रार्थना करें—

ओम् स्थिरोभव वीड्वंग आशुर्भव वार्ज्यवन्।
पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्ने पुरीष वाहणः॥
नन्दे त्वं नन्दिनी पुंसां त्वामत्र स्थापयाम्यहम्।
वेश्मनि त्विह संविष्ठा यावच् चन्द्रार्क तारकाः॥
आयुः कामं श्रियं देहि देववासिनि नन्दिनि।
अस्मिन् रक्षा त्वया कार्या सदा वेश्मनि यत्नतः॥
भद्रे त्वं सर्वदा भद्रं लोकानां कुरु काश्यपि।
आयुर्दा कामदा देवि सुखदा च सदाभव॥

गर्गगोत्र समुद्भूतां त्रिनेत्रां च चतुर्भुजाम्।
गृहेऽस्मिन् स्थापयाम्यद्य जयां चारु विलोचनाम्॥
रिक्ते त्वं रिक्त दोषघ्ने सिद्धि मुक्ति प्रदे शुभे।
सर्वदा सर्व दोषघ्नि तिष्ठास्मिन् विश्वरूपिणि॥
पूर्णे त्वं सर्वदा पूर्णान् लोकांश्च कुरु काश्यपि।
आयुर्दा कामदा देवि धनदा सुतदा तथा॥
गृहधारा वास्तुमयी वास्तुदीयेन संयुता।
त्वामृते नास्ति जगता माधारश्च जगत् प्रिये॥

◇ फूल ईंटों पर चढ़ा दें।

◇ कपूर की आरती करें—

ओम् चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत ।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखा दग्नि रजायत ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
त्राहि मां निरपाद् घोरात् दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

◇ ब्राह्मण को तिलक लगाकर दक्षिणा दे।

तिलक मन्त्र— **ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करीषिणीम्।**
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।।

दक्षिणा संकल्प— **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक नामाऽहम् कृतैतत् शिलान्यास कर्मणः दक्षिणां गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

◇ ब्राह्मण लेकर कहे—**स्वस्ति।**

◇ भूयसी दान—गरीबों को बाँटने के लिए कुछ रुपया पैसा लेकर संकल्प कर दे—

अद्य कृतैतत् शिलान्यास कर्मणः तन्मध्ये न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् इमां भूयसी दक्षिणां दीना नाथेभ्यो ब्रह्मणेभ्यो दातु मह मुत्सृजे।

◇ यथाशक्ति गोदान-स्वर्णदान आदि कर सके तो कर दे।

◇ पुरोहित यजमान को तिलक करे—

ओम् आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणः।
तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये।।

◇ यजमान को रक्षासूत्र (कलाई नारा) बाँधे—

ओम् येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिवध्नामि रक्षे माचल माचल।।

◇ विसर्जन—फूल लेकर हाथ जोड़े—

ओम् यज्ञेन यज्ञ मय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः।।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

सर्व परिपूर्ण कामः विष्णुम् स्मरेत्।
श्री विष्णुः! श्री विष्णुः! श्री विष्णुः।।

◇ यजमान को फल-फूल-अक्षत (मन्त्राक्षत) दे—

ओम् मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणा मुदयस्तव ।।

◇ यजमान जिस आसन पर बैठा है, उसके नीचे जल छोड़कर उस जल को माथे लगावे

◇ आसन से उठ कर ब्राह्मणों का बड़े-बूढ़ों का पांव छुवे।

।। इति शिलान्यास पद्धति ।।